एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरणः **ऑल पीपल्स चर्च एवं विश्व सुसमाचार सम्पर्क, बंगलौर**
प्रथम संस्करण अक्तूबर 2011

अनुवाद एवं प्रूफरीडिंग : सुनील एस. लाल
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन : करुणा जयरोम, बाईफेथ डिज़ाइन्स

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु
इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वारा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है, तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें। धन्यवाद!

(Hindi book - A Real Place Called Heaven)

एक वास्तविक स्थान जो

स्वर्ग कहलाता है

स्वर्ग

एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है

मेरी माताजी दिसम्बर 25, सन् 2000 को प्रभु में सो गईं। मेरे पिताजी, बहन और मैं अन्य कुछ लोग उनके पास खड़े थे जब उनका पृथ्वी पर अन्तिम समय था। यह लगभग शाम का 4:30 बजे का समय था। प्रत्येक साँस लेने में उन्हें बहुत परिश्रम करना पड़ रहा था। तब धीरे-धीरे उनकी साँस ऐसे धीमी पड़ती जा रही थी जैसे मोमबत्ती बुझती जाती है। उनके फेफड़ों को कैंसर ने खा लिया था और डाक्टर अब कुछ नहीं कर सकते थे। उन अन्तिम क्षणों में, उनका हाथ अपने हाथों में लेकर, मैंने आत्मा में प्रार्थना की। हमारे प्रभु यीशु के वचन-"पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ"- तुरन्त मेरे दिमाग में आए। मुझे मालूम था कि वह पूरा पद क्या कहता है, परन्तु मैं उस पर ध्यान देना नहीं चाहता था। मैं इस सत्य को स्वीकार करना नहीं चाहता था कि मेरी माताजी मर रही हैं। मैंने प्रार्थना की, "यीशु आपने कहा है कि आप पुनरुत्थान और जीवन हैं।" मैंने इसे कई बार दोहराया। मैं यह आशा कर रहा था कि एक चमत्कार के द्वारा मेरी माताजी जीवित हो जाएंगी। परन्तु कुछ ही क्षणों में वह चली गईं। हमारे गालों पर आँसू बहते हुए अपने रुँधे हुई आवाजों से हमने यह कोरस गाने की कोशिश की, "वह प्रभु है, वह प्रभु है, मुर्दों में से जी उठा, वह प्रभु है।"

उस घटना के बाद मैंने मृत्यु और उसके बाद के जीवन का व्याख्यान करने वाले बहुत से वचनों को पढ़ा। मैंने उस बात पर विश्वास करने का चुनाव किया जिसे बाइबल मृत्यु और स्वर्ग के बारे में सिखाती है। इन वचनों से मुझे बहुत सामर्थ, आराम, शान्ति, उत्साह और आशा मिली। इनमें से कुछ को मैं इस पुस्तिका में आपके साथ बाँट रहा हूँ। हममें से प्रत्येक कभी न कभी मृत्यु का सामना करता है अथवा अपने प्रियजन की मृत्यु को देखता है। मेरी प्रार्थना यह है कि परमेश्वर का

वचन जो हमारे लिए शान्ति लाया है, वह आपकी आवश्यकता के समय आपके लिए भी ऐसा ही करे।

प्रत्येक मानव प्राणी एक दिन मरेगा। वचन हमें सिखाता है, "और जैसे मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है" (इब्रानियों 9:27)। इससे पुनः अवतरण होने की बात समाप्त हो जाती है-ऐसा विचार कि मनुष्य एक के बाद दूसरा जन्म लेता है ताकि पुराने जीवन के पापों का सुधार कर सके। प्रत्येक व्यक्ति इसमें से केवल एक बार ही गुजरता है, मृत्यु का सामना करता है-केवल उनको छोड़ कर जो "हवा में उठाए जाएंगे" (1 थिस्सलुनीकियों 4:17) और तब अनन्तकाल में पहुँचते हैं।

हम अनन्तकाल के प्राणी हैं। हमारा वर्तमान भौतिक शरीर हमारे अनन्तकालीन भाग हेतु मात्र अस्थाई निवास हैं-हमारी आत्मा और प्राण हेतु। मृत्यु केवल अलगाव है-अनन्तकालीन-हमारी आत्मा और प्राण अस्थाई निवास को मृत्यु के समय छोड़ देते हैं जो हमारे शरीर हैं (याकूब 2:26)। मनुष्य की आत्मा और प्राण लगातार अस्तित्व में रहते हैं या तो स्वर्ग में अथवा नर्क में।

इस जीवन के बाद जीवन

"यीशु ने उससे कहा, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा, और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा। क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?" (यूहन्ना 11:25,26)।

हम लोग जो बाइबल में विश्वास करते हैं, हमें निश्चय दिलाया गया है कि मृत्यु अन्त नहीं है। वे जो यीशु में विश्वास करते हुए मरते हैं, वे जीवित रहेंगे। जब एक मसीही विश्वासी मरता है तब उस विश्वासी की आत्मा स्वर्ग में यीशु के साथ रहती है। उस व्यक्ति का शरीर जीवनरहित प्रतीत होता है परन्तु वह व्यक्ति अभी भी जीवित है। वह व्यक्ति एक भिन्न संसार में रह रहा है-एक ऐसे संसार में जिसे

सामान्यत: हम देख नहीं सकते। एक दिन, "वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं,...और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे" (1 थिस्सलुनीकियों 4:14,16)।

इसीलिए बाइबल मृत्यु को "सोना" कहती है (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-15)। हमारे सामान्य दृष्टिकोण से, क्योंकि मृतक शरीर सक्रिय नहीं है-जैसे एक व्यक्ति सोता है- इसी प्रकार मृत्यु भी सोना समझी जाती है। शीघ्र ही, दिन निकलेगा और प्रभु यीशु जो "धार्मिकता का पुत्र" (मलाकी 4:2) और "संसार की ज्योति" है, आयेगा और वे जो सो गए हैं। वे नए शरीर के साथ अपनी "नींद" से उठेंगे।

चूँकि हमें निश्चय है कि इस जीवन के बाद एक और जीवन है-वर्तमान और पुनरुत्थान में- "हम अन्य लोगों की तरह दुखी नहीं होते जिन्हें आशा नहीं।" हम बिना किसी सन्देह के परे यह जानते हैं कि हमारे प्रिय जन जो मसीह में मर गए हैं, वे इस क्षण जीवित और स्वस्थ हैं। उनके भौतिक शरीर निश्चय ही जी उठेंगे और हम उन्हें देखेंगे। यह मृत्यु यह अलगाव-मात्र अस्थाई है।

पृथ्वी से जाना, स्वर्ग में कदम रखना

" क्योंकि हम जानते हैं कि जब हमारा पृथ्वी पर का डेरा सरीखा घर गिराया जाएगा, तो हमें परमेश्वर की ओर से स्वर्ग पर एक ऐसा भवन मिलेगा जो हाथों से बना हुआ घर नहीं, परन्तु चिरस्थाई है। इसमें तो हम कराहते और बड़ी लालसा रखते हैं कि अपने स्वर्गीय घर को पहन लें कि इसके पहनने से हम नंगे न पाए जाएँ। और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कराहते रहते हैं, क्योंकि हम उतारना नहीं वरन् और पहनना चाहते हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में डूब जाए। जिसने हमें इसी बात के लिये तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिसने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है। अत: हम सदा ढाढ़स बाँधे रहते हैं, और यह जानते हैं कि जब तक हम देह में रहते हैं, तब तक प्रभु से अलग हैं-क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं-इसलिये हम ढाढ़स बाँधे रहते हैं, और देह से अलग होकर प्रभु के साथ रहना और भी उत्तम समझते हैं" (2 कुरिन्थियों 5:1-8)।

जब एक व्यक्ति मसीह में मरता है, उसकी आत्मा और प्राण पृथ्वी को छोड़कर स्वर्ग में प्रवेश करते हैं। उन्होंने अपना निवास बदल लिया है। उन्होंने पृथ्वी के घर को स्वर्गीय घर से बदल लिया है। वे पृथ्वी को खाली करके स्वर्ग में चले गए हैं। इस पृथ्वी के घर में उन्होंने हर प्रकार की कठिनाईयाँ, जीवन के तनाव, चुनौतियों, सताव, बीमारियों से संघर्ष आदि सहन किया। परन्तु जिस क्षण वे मरे, उन्होंने इन सब मुसीबतों को पीछे छोड़ दिया और स्वर्ग में कदम रख लिया। वे इस संसार, हमारे बीच से और अपने भौतिक शरीर छोड़कर अनन्तकाल के घर में उपस्थित हैं– एक ऐसे घर में जो हाथों से बनाया हुआ नहीं है।

चले जाना कहीं बेहतर है

"मैं तो यही हार्दिक लालसा और आशा रखता हूँ कि मैं किसी बात में लज्जित न होऊँ, पर जैसे मेरे प्रबल साहस के कारण मसीह की बड़ाई मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसी ही अब भी हो, चाहे मैं जीवित रहूँ या मर जाऊँ। क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है। पर यदि शरीर में जीवित रहना ही मेरे काम के लिये लाभदायक है तो मैं नहीं जानता कि किसको चुनूँ। क्योंकि मैं दोनों के बीच अधर में लटका हूँ; जी तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूँ, क्योंकि यह बहुत ही अच्छा है, परन्तु शरीर में रहना तुम्हारे कारण और भी अच्छा है" (फिलिप्पियों 1: 20–24)।

ऊपर लिखे गए विचार से, हम विश्वासियों के लिए "मरना लाभ" है। चले जाना और प्रभु के साथ "अधिक भला" है। मृत्यु पराजय नहीं है। मृत्यु दुखी होने का समय नहीं है। मृत्यु एक स्थान में प्रवेश करना है जो बहुत अच्छा, इस पृथ्वी पर बिताए गए सबसे अच्छे क्षणों से कही अधिक महिमावान है। हमारे प्रिय जन जो मसीह में मर गए हैं वे उन अनुभवों का आनन्द उठा रहे हैं जिन्हें हमने कभी अनुभव नहीं किया है। जी हाँ, उनकी अनुपस्थिति उनके चले जाने के बाद महसूस होती है। हमारा हृदय उनका साथ, संगति और वह समय जो हमने साथ बिताया, याद करता है। परन्तु वह "दर्द," वह अपनापन कुछ ऐसा है जिसे हम अनुभव करते हैं। दूसरी ओर, हमारे प्रिय जन महान् आनन्द का अनुभव

कर रहे हैं। वे मसीह की उपस्थिति में हैं। उनका चला जाना इस दृष्टिकोण से देखने पर हमें अपना व्यक्तिगत दुख एक ओर रखकर उनके आनन्द–उनके लाभ में आनन्दित होना चाहिए!!

स्वर्ग एक अद्भुत स्थान है

"तुम्हारा मन व्याकुल न हो; परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से कह देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूँ" (यूहन्ना 14:1,2)।

"हे पिता, मैं चाहता हूँ कि जिन्हें तूने मुझे दिया है, जहाँ मैं हूँ वहाँ वे भी मेरे साथ हों, कि वे मेरी उस महिमा को देखें जो तूने मुझे दी है, क्योंकि तूने जगत की उत्पत्ति से पहले मुझ से प्रेम रखा" (यूहन्ना 17:24)।

हममें से बहुत से लोगों ने जो यीशु में विश्वास करते हैं कभी मसीह को नहीं देखा होगा और न ही उसकी आवाज़ सुनी होगी। हमने केवल उसकी उपस्थिति को महसूस किया होगा, उसके आत्मा की अगुवाई को महसूस किया होगा, परमेश्वर के अच्छे वचन और आनेवाले युग की सामर्थ का स्वाद चखा होगा (इब्रानियों 5:5)। फिर भी जिस क्षण हम मरते है उसी क्षण हम वहाँ पहुँच जाते है जहाँ वह है और उसकी महिमा देखते हैं। वे उस जगह प्रवेश करते हैं जिसे प्रभु यीशु ने उनके लिये तैयार की है। वे श्वेत वस्त्र पहने हुए हैं (प्रकाशितवाक्य 3:5)। वे उन स्वर्गीय प्राणियों को देखते हैं जो सिंहासन पर बैठा है, की आराधना करते और महिमा देते और आदर देते और धन्यवाद देते हैं, जो युगानुयुग तक जीवित है (प्रकाशितवाक्य 4:9)। वे कभी न समाप्त होनेवाली आराधना में भाग लेते हैं। वे उन लाखों लोगों से मिलते हैं जो हम से पहले वहाँ जा चुके हैं। और वहाँ कुछ और भी है जिसे हम जानते हैं और नहीं भी जानते हैं, उस महिमा के विषय में जो स्वर्ग में है। हमारे प्रिय जन जो हमें छोड़ कर मसीह के पास चले गए हैं अब वे स्वर्ग में हैं– एक अद्भुत स्थान में!

इन वचनों से एक दूसरे को शान्ति दिया करो

"क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिये जाएँगे कि हवा में प्रभु से मिलें; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगें। इस प्रकार इन बातों के द्वारा एक दूसरे को शान्ति दिया करो" (1 थिस्सलुनीकियों 4:16-18)।

मृत्यु, स्वर्ग, पुनरुत्थान और इसके बाद के जीवन के विषय में सच्चाई को प्रकट करने का प्रभु यीशु मसीह का बुनियादी कारण यह भी है कि हम आशावान व्यक्ति बनें। इस आशा के साथ जो वचन पर आधारित है, हम एक दूसरे को शान्ति दे सकते हैं। ये वचन इसलिए दिए गए हैं कि हमें शान्ति-बल और सामर्थ मिले ताकि हम परमेश्वर का काम लगातार करते रहें (1 कुरिन्थियों 15:58)। तौभी हम वचन से शान्ति और अनुभव प्राप्त नहीं कर सकते यदि हम उन पर विश्वास करने और उन पर चलने का चुनाव नहीं करते हैं। हमें अपनी सोच, विश्वास और व्यवहार को उन बातों के सदृश्य करना होगा जो वचन हमें सिखाता है।

हममें से कुछ दुख के समय मनुष्यों की सहानुभूति अधिक चाहते हैं अपेक्षाकृत वचन की शान्ति। हमें मनुष्यों की सहानुभूति अधिक पसन्द आती है जिसे वे देने का प्रयास करते हैं। तौभी लोग सदैव सहानुभूति नहीं प्रदान करते रहेंगे। और जब यह रुक जाती है, तब हम सोचने लगते हैं कि हमें कोई प्यार नहीं करता न ही उन मुसीबतों को समझता है जिनमें से होकर हम गुजर रहे हैं। परन्तु सच्चाई यह है कि हम गलती कर रहे हैं। हमारी कमजोरी यह है कि हम वचन की शान्ति और सहानुभूति से अधिक मनुष्यों की सहानुभूति पर निर्भर रहते हैं। हमें इस कमजोरी पर विजय पाना है। हमें अपने आप को परमेश्वर के वचन पर मनन करने और उससे और उसके वचन से बल प्राप्त करने हेतु अनुशासित करना आवश्यक है।

प्रश्न जिनके उत्तर नहीं हैं

प्राय: ऐसे समय में, बहुत से प्रश्न उठते हैं और उनका उत्तर नहीं मिलता है। क्यों कोई जवानी में मर गया? उन्हें क्यों बीमारी, दुर्घटना अथवा किसी विपत्ति से मरना पड़ा? उन्हें परमेश्वर की शक्ति के द्वारा क्यों चंगाई, सुरक्षा और छुटकारा नहीं मिला? क्यों? क्यों? क्यों? ऐसे प्रश्नों की लम्बी सूची बन सकती है जिसका कोई अन्त नहीं होता। जैसे-जैसे हम परमेश्वर के साथ चलते हुए परिपक्व होते हैं, हमें यह सत्य सीखना और स्वीकार करना होगा कि स्वर्ग के इस पार बहुत से प्रश्न बिना उत्तर हैं। जी हाँ, हम प्रश्नों का उत्तर देने का सदैव प्रयास कर सकते हैं जैसे "प्रकाशन के ज्ञान का आभाव", "विश्वास की कमी" आदि। परन्तु ये सब उत्तर देने का हमारा प्रयास मात्र है परन्तु हम निश्चित नहीं हैं। प्रत्येक परिस्थिति अपनी भिन्नता के साथ अपने आप में अलग है, और हम इतना ही जानते हैं। क्योंकि अभी हमारा ज्ञान अध ूरा है, परन्तु तब-जब सर्वसिद्ध आयेगा-तब हम ऐसे पहचान लेंगे जैसे हम पहचाने गए हैं (1 कुरिन्थियों 13:10,12)। "गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं; परन्तु जो प्रगट की गई हैं वे सदा के लिये हमारे और हमारे वंश के वश में रहेंगी, इसलिये कि इस व्यवस्था की सब बातें पूरी की जाएँ" (व्यवस्थाविवरण 29:29)। यह स्वीकार करना बुद्धिमानी है कि हमें ऐसे प्रश्नों के सही उत्तर कभी नहीं मिलेंगे। तौभी हम उन बातों के द्वारा जीवित रह सकते हैं जिन्हें हम जानते हैं।

अब जबकि हम पृथ्वी पर ही हैं

"इस कारण हमारे मन की उमंग यह है कि चाहे साथ रहें अलग रहें, पर हम उसे भाते रहें। क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए" (2 कुरिन्थियों 5:9,10)।

"इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ें" (इब्रानियों 12:1)।

वे लोग जो मर गए हैं और हमसे पहले चले गए हैं उन्होंने अपने जीवन की गवाही हमारे लिए छोड़ी है। उन्होंने परमेश्वर के राज्य के लिए वह सब कुछ किया है जो वे कर सकते थे। शायद वे आज भी स्वर्ग के गलियारों से हमें देख रहे हैं जो अभी भी अपने जीवन की दौड़ दौड़ रहे हैं। अतः हमें अपना यह लक्ष्य बनाना चाहिए कि हम अपनी दौड़ जो परमेश्वर ने हमारे सामने रखी है धैर्य से दौड़े। हम सब कामों में उसे प्रसन्न करने का प्रयास करें। हम सदैव अपने दुख और पीड़ा में नहीं रह सकते हैं। हमें उस स्थान से ऊपर उठकर, जहाँ हमने अपने प्रिय जन को विदाई दी है, परमेश्वर की बुलाहट में आगे बढ़ते जाना है। एक दिन, हम उन सब के साथ जो हमसे पहले मसीह में चले गए हैं, प्रभु के सामने खड़े होंगे इस पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के लिए किए गए कामों के अनुसार उससे इनाम पाएंगे। काश वे सब जो हमसे पहले वहाँ गए हैं हमें विश्वासयोग्य पाएं!

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट "ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर" के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर. ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव
अपनी बुलाहट से समझौता न करें
आशा न छोड़ें
परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना
परमेश्वर एक भला परमेश्वर है
परमेश्वर का वचन
सच्चाई
हमारा छुटकारा
समर्पण की सामर्थ
हम भिन्न हैं
कार्यस्थल पर महिलाएं
जागृति में कलीसिया
प्रत्येक काम का एक समय
आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान
पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना
अपने पास्टर की कैसे सहायता करें
कलह रहित जीवन जीना
एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है
परिशद्ध करने वाले की आग
व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना
आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना
राज्य का निर्माण करने वाले
खुला हुआ स्वर्ग
हम मसीह में कौन हैं
ईश्वरीय कृपा
परमेश्वर का राज्य
शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था
मन की जीत
जड़ पर कुल्हाडी रखना
परमेश्वर की उपस्थिति
काम के प्रति बाइबल का रवैया
ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा
अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ
प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम ‘लिविंग स्ट्रांग’ के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

ALL PEOPLES CHURCH
Bible College
& MINISTRY TRAINING CENTRE

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ॲण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।
- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **"पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है"** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

नोट्स

नोट्स

नोट्स

हममें से प्रत्येक कभी न कभी मृत्यु का सामना करता अथवा अपने प्रियजन की मृत्यु को देखता है। मैंने उस बात पर विश्वास करने का चुनाव किया जिसे बाइबल मृत्यु और स्वर्ग के बारे में सिखाती है। इन वचनों से मुझे बहुत सामर्थ, आराम, शान्ति, उत्साह और आशा मिली। इनमें से कुछ मैं इस पुस्तिका में आपके साथ बाँट रहा हूँ। परमेश्वर का वचन जो हमारे लिए शान्ति लाया, वह आपकी आवश्यकता के समय आपके लिए भी ऐसा ही करे।

आशीष रायचूर

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org